सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• जयकृष्ण चाण्डक

सृजक-सृजन-समीक्षा

जयकृष्ण चांडक

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स**, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

जयकृष्ण चांडक का परिचय

नाम,,,जयकृष्ण चांडक "जय"

पिता ,,स्व. श्री गोवर्धनदास जी 'चांडक'

माता,, पुष्पादेवी चांडक

जन्मदिन- 09/12/1972

पता ,,,"रमण विला" चांडक चौराहा हरदा,,,,

जिला हरदा ,

म. प्र.-पिन कोड 461331

व्यवसाय,,, कृषि उपकरण,एंव स्टील फेब्रीकेशन इंडस्ट्रीज

रुचियां,,,चित्रकला, मूर्तिकला, गायन एवं काव्य लेखन

आध्यात्मिक सेवाएं ,,,मंदिर में भगवान के श्रंगार,,आदि

दो साझा संग्रह,,,,, खुश्बुऐ ग़ज़ल, साहित्य सुरभि, एक ग़ज़ल संग्रह

और मुक्तक संग्रह प्रकाशाधीन

पुरुष्कार,,,, विशेष प्रतिभा सम्मान २०१६,

हमकदम साहित्य प्रतिभा सम्मान २०१७

कृषि उपज मंडी समिति के द्वारा कला के क्षेत्र में सम्मान

माहेश्वरी समाज के द्वारा विशेष सम्मान

प्रतिभा मंच दिल्ली के द्वारा नवोदित ग़ज़लकार सम्मान

पद,,,

अध्यक्ष,, मध्य प्रदेश लेखक संघ, जिला इकाई हरदा

जिला संयोजक,,, राष्ट्रीय कवि संगम, जिला इकाई हरदा

उपाध्यक्ष,,, तुलसी साहित्य अकादमी, जिला इकाई हरदा

सचिव,,, हिंदी साहित्य सम्मेलन जिला इकाई हरदा

सांस्कृतिक सचिव,,, माहेश्वरी समाज हरदा

प्रभारी सांस्कृतिक प्रकोष्ठ,, म. प्र. वैश्य महासम्मेलन, हरदा

आत्मकथ्य,,,,

ये आज तक भी पता नहीं चला मुझे कि,,,, एक विशुद्ध व्यापारी होने के बावजूद ये कलम कहां से हाथ में आ गई,,,, पर जो भी थोड़ा बहुत लिखा,,, लोगों की सराहना मिली,,,, तो और लिखा,,, बस ,,,

लेखन का उद्देश्य,,,,

मात्र स्वंय की आत्मसंतुष्टि ,,, चाहे थोड़ा लिखुं पर जो भी हो ठीक हो,,, किसी की भावनाओं को ठेस ना पहुंचे,,, और खुद को भी अच्छा लगे,,,, सुख में भी लिखता हूं और कभी दुखी होकर भी लिखता हूं,,,, मूल रुप से ग़ज़ल और मुक्तक लिखने की कोशिश कर रहा हूं,,,, मां सरस्वती की कृपा मानकर,,,,,,

जयकृष्ण चांडक

सृजक का सृजन

एक गीत

मिलना है, बिछडना है, पाना है और खोना है,
रब ने जैसा सोचा है, वैसा ही सब होना है!

खुशी यहां तो ग़म भी हैं,
दर्द है तो मरहम भी हैं,
किसी के हिस्से ज्यादा हैं,
किसी के हिस्से कम भी हैं,
अपने पापों की गठरी खुद, हमको ही ढोना है,,,,,,
रब ने जैसा सोचा है,,,,,,,,,

जीवन जब तक सांस भी है,
सांसें जब तक आस भी है,
अपने हमसे दूर भी हैं,
गैर हमारे पास भी है,
वक्त पर मिलेगा सबको, ना कोई जादू टोना है,,,,,,,,,
रब ने जैसा सोचा है,,,,,,,

या जीने को मज़ा समझें,

या फिर एक सज़ा समझें,

जो होगा अच्छा होगा,

इसमें रब की रज़ा समझें,

उसकी चाबी से चलता, जीवन एक खिलौना है,,,,

रब ने जैसा सोचा है,,,,,,,,

सबसे मन की बात कहें,

सबसे मिलकर साथ रहें,

हम सागर की बूंदें हैं,

मिलकर धारा संग बहें,

जैसे भी हो इस माला को इक धागे में पिरोना है,,,,,,

रब ने जैसा सोचा है,,,,,,,,

हम दिन को रात करें कैसे,

हम सबको साथ करें कैसे,

जो बस में नहीं हमारे है,

हम उसकी बात करें कैसे,

सब जानकर अंजान है बस इसी बात का रोना है,,,,,,,

रब ने जैसा सोचा है,,,,,,,,

मिलना है, बिछडना है, पाना है और खोना है,

रब ने जैसा सोचा है वैसा ही, सब होना है!

गजल

गुनगुनाते चलो गीत गाते, चलो,
मुश्किलों में सदा मुस्कुराते, चलो!

वो खुदा भी तुम्हे तो निभा लेगा फिर,
तुम भी रिश्ते जहां के निभाते, चलो!

फिर किसी और को चोट लग ना सके,
राह के पत्थरों को उठाते, चलो!

सिर्फ नासूर है नफरतें अब यहां,
प्रेम मरहम है सबको लगाते, चलो!

रौशनी जिसकी सबको मिले राह में,
ऐसा दीपक बनो जगमगाते, चलो!

तेरी नेकी, इमां तेरा श्रंगार 'जय',
अपने जीवन को यूं ही सजाते, चलो!

ग़ज़ल

ग़ैर थे कल तक हमारे, हो गऐ,
एक दूजे के सहारे, हो गऐ!

आंखों ही आंखों में बातें हो गई,
मिलने- जुलने के इशारे, हो गऐ!

छत पे मेरी मुस्कुराई चांदनी,
मेहबे हैरत सब सितारे, हो गऐ!

इश्क की इस आग में जलते हुऐ,
फूल, शबनम सब शरारे, हो गऐ!

है समां मदहोश महकी सी फज़ाऐं,
कैसे कुदरत के नज़ारे, हो गऐ!

खुद को समझते थे कभी भगवान जो,
सबके सब अल्ला को प्यारे, हो गऐ!

दोस्ती क्या हमने की मंझधार से,
दूर हमसे 'जय' कनारे, हो गऐ!

ग़ज़ल

महल रेत का घर, रेत का,
गांव हो या शहर, रेत का!

किरकिरी सी है आंखों में,
बडा लगे है ड़र, रेत का!

हर सू इक तूफान खड़ा है,
उधर रेत का इधर, रेत का!

वक्त भी देखो फिसल रहा,
हुआ है ये असर, रेत का!

सबके सब बुतों में ढल गए,
हर इंसा, हर बश़र, रेत का!

क्यों छूने से ही बिखर गया,
'जय' कैसा ये ज़िगर, रेत का!

"ये कविता मेरी है"

श्वेत, धवल, उजले आंगन पर मैने,
इक कलम कुछ स्याही लेकर,
अन्तर्मन के अंतर्द्वंद की भावनाऐं उकेरी है,
इसलिये कहता हूं लोगों ये कविता मेरी है!

दो शब्द मां ने लिखवाऐ, दो अक्षर मेरे बाबा के,
कुछ अक्षर मिले मुझे मथुरा, काशी, काबा के,
कितने ही रुपों में मिली, ये शब्दों की हेराफेरी है,,,
इसलिये कहता हूं लोगों ये कविता मेरी है!

इन शब्दों से शायद कोई, मसला हल हो जाऐ,
मैं सफल हो जाऊं, मेरी कलम सफल हो जाऐ,
कुछ प्रतिफल मिल जाऐ, अब इतनी सी तो देरी है,,
इसलिये कहता हूं लोगों ये कविता मेरी है!

शब्दों में ही जीना मुझको शब्दों संग ही मरना है,
मंज़िल तक अपनी ये सफर तय यकीनन करना है,
पर दूर बहुत सवेरा अब भी,, ये रात बडी अंधेरी है!
इसलिये कहता हूं लोगों ये कविता मेरी है!

ग़ज़ल

एक मुश्किल थी मेरी जो हल, ना हुई,
ज़िन्दगी आज तक भी सरल, ना हुई!

मैं ज़माने के संग ना चला इसलिये,
झोपडी मेरी अब तक महल, ना हुई!

साहूकारों के जैसी मेरी ज़िन्दगी,
ब्याज में कट गई पर असल, ना हुई!

बाद आज़ादी के फिर मेरे देश में,
इक भगतसिंग सी पैदा नसल, ना हुई!

आपकी तारीफें और मिली दाद भी,
फिर भी कहते हो अच्छी ग़ज़ल, ना हुई!

आपका प्यार है जब मेरे साथ फिर,
ज़िन्दगी 'जय' की कैसे सफल, ना हुई!

गज़ल

अब तो सब त्योहार, नये हैं,
अपनो के व्यवहार, नये हैं!

खुशियों की दुकान पुरानी,
ग़म के कारोबार, नये हैं!

खुदा वही है, राम वही है,
फूलों के बस हार, नये हैं!

मन मैला है तन भी काला,
कपडे और श्रृंगार, नये हैं!

कैदी हैं जन्मों से हम, तुम,
तन के कारागार, नये हैं!

रिश्तों की देहरी पर बिखरे,
जीवन के आधार, नये हैं!

हिम्मत से 'जय', फिर तु उठ!
आगे तेरे संसार ,नये हैं!

सृजन की समीक्षा

1.

जय हो जय हो जय हो....

आज सप्ताह के कवि विशेषांक में मेरे अनुज और परम सखा को देखकर मन प्रफुल्लित है...वैसे तो आपकी विविध विषयों पर लिखी रचनाएँ मन को छूती ही है पर आज पटल पर रचनाओं का पूरा मधुबन सुगन्ध बिखेर रहा है...

एक गीत...मिलना है, बिछड़ना है...

ग़ज़ल........गुनगुनाते चलो....

ग़ज़ल........गैर थे कल तक हमारे हो गए...

ग़ज़ल........महल रेत का घर, रेत का...

कविता.....श्वेत, धवल, उजले आंगन पर मैनें..

ग़ज़ल....एक मुश्किल जो हल, ना हुई...

ग़ज़ल....हिम्मत से 'जय',फिर तू उठ!

आगे तेरे संसार नए है!

उफ़्फ़फ़फ़फ़फ़... एक से बढ़कर एक शानदार गीत कविता एवं ग़ज़ल्स की यह सौगात.... माँ सरस्वती की आप पर कृपा सदैव बनी रहे. बहुत बहुत आशीर्वाद.. **अंतरा संचालक मंडल को धन्यवाद...**

कैलाश बिहारी सिंघल

2.

आदरणीय जय जी के भीतर का रचनाकार तमाम कसौटियों पर खरा है । ऐसा कम ही होता है लक्ष्मी पुत्रों पर सरस्वती ज्यादा मेहरबान हो ।
जय जी ,मेरे पसन्दीदा रचनाकारों में से हैं । उनकी ग़ज़लें भीतर से उद्वेलित करती हैं । आज उनके तमाम रूप देखकर जी भीतर से जुड़ा गया ।

संवेदना और कला का अद्भुत संगम, निःसन्देह आध्यात्म का पहला चरण होता है और आपका सानिद्धय निःसन्देह हम जैसे लोगों के लिए

गौरव का विषय है । जब सृजन में तमाम आयाम विस्तार पाते हैं तो पाठक स्वयम् को सृजक के निकट महसूस करता है ।
लेखन और तमाम अन्य विशेषताएं आला दर्ज़े की हैं । ईश्वर वरद हस्त बनाये रखें ।
गीत :- बेहद खूबसूरत हुआ । शाश्वत सत्य का आख्यान है जैसे ।
कहीं 2 लय टूट रही है ।
ग़ज़ल :- खूबसूरत अश्आर हुए, शायर प्रेम ,नेकी और ईमान का हामी है। स्पष्ट परिलक्षित है ।
अगली ग़ज़ल रुमानियत से लबरेज़ है । क़ाबिले गौर मक़ता है ।
रेत का:-नश्वरता का अहसास दिलाते अश्आर
ये कविता मेरी है:-खुद के अँधेरे-उजालों और अपने शब्दों के प्रति सम्मान का भाव, माता पिता के दिए शब्दों के प्रति, कवि की खूबसूरत भावांजलि है ।
बाक़ी ग़ज़ल भी खूबसूरत हुई हैं ।
भगत सिंह सा सपूत फिर से पैदा न होना शायर के अन्तस् का दर्द है । मन मैला है तन भी काला विसंगतियों और विद्रूपताओं पर करारा तंज़ लिए , ताज़गी के अहसास से लबरेज़ अश्आर हैं सभी ।
मंगल कामनाएँ ,..जय हो,विजय हो

ब्रजेश शर्मा विफल , झाँसी

3.
केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में जयकृष्ण चांडक "जय" जी के आत्मकथ्य और रचनाओं को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। व्यवसाय अलग, रुचियों के धनी, आध्यात्मिक सेवाओं में लीन, कलम और तूलिका का अदभुत संगम....विभिन्न संस्थाओं से जुड़ाव के साथ-साथ साहित्य सृजन..... नमन है आपके इस बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व को।
मेरा ये मानना है कि व्यक्ति में अगर प्रतिभा है तो वह उजागर होने के लिए मार्ग ढूँढ लेती है। आपकी प्रतिभा ने, आपकी रूचियाँ ने अपने प्रकटीकरण के लिए मार्ग बनाया और आपको उस ओर उन्मुख कर दिया....जहाँ से सृजन की राह आरंभ होती है। **जब लेखन का उद्देश्य**

पवित्र भावना लिए हुए हो तो.... कलम से जो निकलता है वो अपने आप में एक उदाहरण बनता चलता है।
पहली ही गीत रचना ....रब ने जैसा सोचा है वैसा ही होना है.... मानते हुए भी आशा का संग कर्तव्यपथ से विमुख नहीं होने देता।
ग़ज़लें.... अपनी सहजता और सरलता में बहुत प्रभावित करती हैं।
ये कविता मेरी है ....की पंक्तियाँ...शब्दों में ही जीना मुझको शब्दों संग ही मरना है....सृजन के प्रति आपकी उत्कट इच्छा को प्रकट करती है।
ग़ज़लों का दार्शनिक अंदाज़ और अपनी बात को कहने की सरलता रचनाओं की ख़ूबी है,.अपनी इसी विशेषता को रचनाओं में बनाए रखिए। भविष्य में आपकी कलम से और अच्छी रचनाएँ हमें पढ़ने को मिलती रहेगी... ऐसा मेरा विश्वास है। शुभकामनाएँ।

डा०भारती वर्मा बौड़ाई

4.

आदरणीय जय कृष्ण जी
सादर वंदन और ढेर सारी बधाइयाँ कि आज की उत्सव मूर्ति आप है, अब आप के बारे में कहाँ से शुरू करूँ और ये भावनाएं कहाँ जा कर खत्म होगी नहीं पता,...
आप से साक्षात मिला, सुना और आप को अमूमन हर रोज़ पढ़ता भी हूँ। एक विशेष बात तो ये है कि आप की लेखनी सीधे दिल में उतरती है और जब भी पढ़ो तो खुद ब खुद तरन्नुम जुबां पर आ जाती है, और इस से ज्यादा घोर आश्चयर्जनक बात तो ये कि में जो लिखता हूँ वो आज तक में खुद तरन्नुम में नही डाल पाता हूँ,,तो अब आप ही समझ लो कि आप की लेखनी कितनी प्रभावी है।
छोटे मीटर की ग़ज़ल के तो आप किंग खान है ही, कोई तोड़ नहीं है आप का, मुझे याद है आप की एक ग़ज़ल जिसका हर शैर मात्र 4 शब्दो मे सिमट गया था,,, हे भगवान!!! ऐसा कैसे कर पाते है आप!!! आप के मुक्तक भी उतने ही रसीले है जितना सुरीला आप का कंठ है,
आप को भगवान ने साहित्य और कला का कम्पलीट पैकेज बना के भेजा है, ग़ज़ल नज़्म,मुक्तक,गीत, ऊपर से सुरीला गायन, फिर चित्रकला, मूर्तिकला, रंगोली सब कुछ, आल इन वन,, व्वाह व्वाह व्वाह क्या खूब

चित्रकारी और शिव भगवान की सजावट, दीवाली की रंगोली व्वाह व्वाह व्वाह,,

आप की हर रचना लाजवाब से भी उत्कृष्ट होती है हर ग़ज़ल और उसके अशआर मजबूर कर देते है व्वाह व्वाह को,.. क्या कहने आप के बारे में, बस दिल से इत्ती सी दुआ है कलम का ये सफर रंगों की दुनिया में खुशबू बिखेरता हुआ खुशियाँ बांटता हुआ ताउम्र चलता रहे, कभी रंग बन रंगोली में आ जाये तो कभी चित्रों में समा जाए तो कभी भगवान के चरणों मे अर्पित हो जाये।

आप को दिल से बहुत बहुत बहुत बधाइयाँ,

आप को समर्पित आप पर लिखी एक रचना

छोटा मीटर

बढ़ी गजल

ऊँचा कद

सौम्य सरल

सुरीला कंठ

सुर सजल

हो जाता है

दिल बहल

आपका दिल

जैसे महल

कुछ नया

अच्छी पहल

जयकृष्ण जी

बहुत सफल

मैं अब कलम को विराम देते हुए, पुनः खूब सारी बधाइयाँ और शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ

धन्यवाद

शीतल खंडेलवाल

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम — www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhashaa.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com